HIN3B18b

मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964)

मनुष्यता

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी ।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए ।
वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती ।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती ।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

क्षुधार्त रंतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी ।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया ।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे ?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही,
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही ।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा ?
अहा ! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में ।
अनाथ कौन है यहाँ ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं ।

अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

अनंत अंतरिक्ष में अनंत देव हैं खड़े,
समक्ष ही स्वबाहु को बढ़ा रहे बड़े-बड़े ।
परस्परावलंब से उठो तथा बढ़ो सभी,
अभी अमर्त्य-अंक में अपंक हो चढ़ो सभी ।
रहो न यों कि एक से न काम और का सरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

"मनुष्य मात्र बंधु हैं" यही बड़ा विवेक है,
पुराणपुरुष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है ।
फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद है,
परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद है ।
अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए ।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी ।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ॥

भारत-संतान

जय भारत, जिसकी कीर्ति
सुरों ने गाई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

हाँ, गूँज उठे आकाश अनिल के द्वारा ;
अगणित कण्ठों से बहे एक स्वर-धारा ।
कह दो, पुकार कर, सुने चराचर सारा ;

है अब तक भी अस्तित्व अखण्ड हमारा ॥
अब तक भी है कुल-कीर्ति
हमारी छाई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

घन घोषित कर दे, उक्ति-भूमि भारत है ;
कह दे समीर यह युक्ति-भूमि भारत है ।
ध्वनि उठे धरा से, भुक्ति-भूमि भारत है ;
गूँजे अनन्त नभ, मुक्ति-भूमि भारत है ॥
देवों को भी यह दिव्य
देश मुददायी ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

अच्युत ने हमको आत्म भाव दिखलाया ;
श्री राम-कृष्ण ने धर्म्म-कर्म्म सिखलाया ।
जिन और बुद्ध ने दया-प्रेम दरसाया ;
क्यों न हो हमें इस मातृभूमि की माया ?
भगवत् को भी यह पुण्य -
भूमि मन भाई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

बस, इसी दिशा से प्रथम प्रकाश हुआ था ;
शुभ साम-गान से मोह-विनाश हुआ था ।
पृथ्वी तल का पशुभाव हताश हुआ था ;
मानव-कुल में मनुजत्व-विकास हुआ था ॥
हमसे जीवन की ज्योति
जगत ने पाई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

उत्पनन् मुक्ति भी हुई अहा ! भारत में ;
मनु ने स्वतन्त्र को सुखी कहा भारत में ।
अधिकार-गर्व यों अटल रहा भारत में ;
भाई भाई तक लड़े महाभारत में ॥
शर-शय्या पर भी राज -
नीति समझाई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

सब बातों में हम रहे सदा आगे हैं ;
विघ्नों के भय से कहीं नहीं भागे हैं ।
सदियों तक सोये, किन्तु पुनः जागे हैं ;
अब भी हमने निज भाव नहीं त्यागे हैं ॥
फिर वारी है संसार !
हमारी आई ।
हम हैं भारत-सन्तान --
करोड़ों भाई ॥

माँ, कह एक कहानी

"माँ, कह एक कहानी",
"बेटा, समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी ?"
"कहती है मुझसे यह चेटी ।
तू मेरी नानी की बेटी ।
कह माँ, कह, लेटी ही लेटी,
राजा था या रानी ?
राजा था या रानी ?
माँ, कह एक कहानी ।" (१)

"तू है हठी मानधन मेरे,
सुन, उपवन में बड़े सवेरे,
तात भ्रमण करते थे तेरे,
जहाँ सुरभि मनमानी ।"

"जहाँ सुरभि मनमानी ?
हाँ, माँ, यही कहानी ।" (२)

"वर्ण वर्ण के फूल खिले थे,
झलमलकर हिम-बिन्दु झिले थे,
हलके झोंके हिले-मिले थे,
लहराता था पानी ।"
"लहराता था पानी ?
हाँ, हाँ, यही कहानी ।" (३)

"गाते थे खग कल-कल स्वर से,
सहसा एक हंस ऊपर से
गिरा, विद्ध होकर खर-शर से,
हुई पक्ष की हानी ।"
"हुई पक्ष की हानी ?
करुणा-भरी कहानी ।" (४)

"चौंक उन्होंने उसे उठाया,
नया जन्म-सा उसने पाया ।
इतने में आखेटक आया,
लक्ष्य-सिद्धि का मानी ।"
"लक्ष्य-सिद्धि का मानी ?
कोमल-कठिन कहानी ।" (५)

"माँगा उसने आहत पक्षी,
तेरे तात किन्तु थे रक्षी ।
तब उसने, जो था खगभक्षी --
हठ करने की ठानी ।"
"हठ करने की ठानी ?
अब बढ़ चली कहानी ।" (६)

" हुआ विवाद सदय-निर्दय में,
उभय आग्रही थे स्वविषय में ।
गई बात तब न्यायालय में,

सुनी सभी ने जानी ।"
"सुनी सभी ने जानी ?
व्यापक हुई कहानी ।" (७)

"राहुल, तू निर्णय कर इसका --
न्याय पक्ष लेता है किसका ?
कह दे निर्भय, जय हो जिसका ।

सुन लूँ तेरी बानी ।"
"माँ, मेरी क्या बानी ?
मैं सुन रहा कहानी । (८)

कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य न उसे उबारे ?
रक्षक पर भक्षक को वारे,

न्याय दया का दानी ।"
"न्याय दया का दानी ?
तूने गुनी कहानी ।" (९)